मेरी ख्वाहिश है की मैं फिर से फ़रिश्ता हो जाऊं
माँ से इस तरह लिपटूं की बच्चा हो जाऊं

मदर्स डे पर
अपनी अपनी माँ को समर्पित

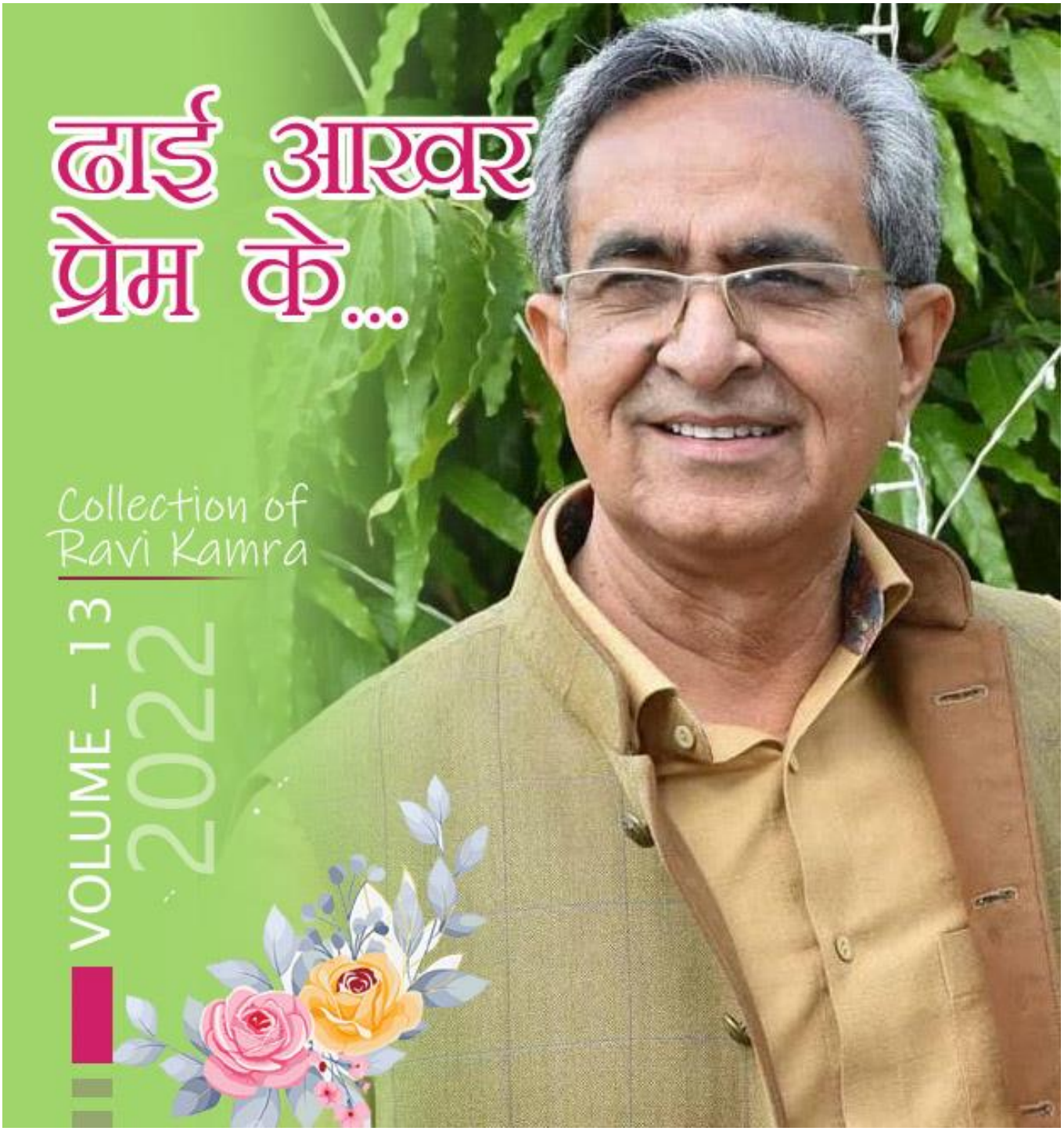

- बारिश होती थी तो दोनों भीगते थे
  मै रास्ते में माँ दरवाज़े पर

- दिल तरसता है उन दिनों को.....माँ जब ,
  हर सुबह बस्ते में सारी खुशियाँ भर विदा करती थी !
  नीति ...

- घोंसले में आई चिडिया से पूछा चूजों ने
  "माँ आकाश कितना बड़ा है ?"
  चूजों को पंखो के नीचे समेटती बोली चिडिया
  "सो जायो इन पंखो से छोटा है आकाश "

- वह कबूतर क्या उड़ा छप्पर अकेला हो गया
  माँ के आँखे मूंदते ही घर अकेला हो गया.....

- पहले ये काम बड़े प्यार से माँ करती थी,
  अब हमें धूप जगाती है तो दुःख होता है !
  उम्र माँ की कभी बेटे से ना पूछी जाए,
  माँ तो जब छोड़ के जाती है तो दुःख होता !

- **खुदा ने 'माँ ' से सवाल किया अगर आपके कदमो से जन्नत ले ली जाए और आपसे कहा जाए की कुछ और मांग लो तो आप खुदा से क्या माँगोगी ……..?**
  तो 'माँ' ने बहुत खुबसूरत जवाब दिया ……
  "मैं अपनी ओलाद का नसीब अपने हाथ से लिखने का हक मांगूगी । क्योकि ……उनकी ख़ुशी के आगे मेरे लिए जन्नत छोटी है।"

- **माँ तुम्हारी याद आती है**

  कोई माँ जब थपकी से अपने बच्चे को सुलाती है, खुद तो धुप सहती है, बच्चे को आँचल ओढाती है,
  तो यह देख कर, माँ तुम्हारी याद आती है ।

जब परीक्षा के दिन मै घबराता था, किताब खोल के बस सहम जाता थी, और माँ मुझे दही चीनी खिलाती थी, फिर खाना परोस कर परीक्षा का हाल पूछती थी, तो ये सोच , आँखे नम हो जाती है --तब माँ तुम्हारी याद आती है ।

- """ माँ """
  मैंने माँ को देखा है ,
  तन और मन के बीच ,
  बहती हुई किसी नदी की तरह ,
  मन के किनारे पर निपट अकेले,
  और तन के किनारे पर ,
  किसी गाय की तरह बंधे हुए ,
  मैंने माँ को देखा है ,
  किसी मछली की तरह तड़पते हुए बिना पानी के,
  पर पानी को कभी नहीं देखा तड़पते हुए बिना मछली के ,
  मैंने माँ को देखा है ,
  जाड़ा,गर्मी, बरसात ,
  सतत खड़े किसी पेढ़ की तरह ,
  मैंने माँ को देखा है ,
  हल्दी,तेल, नमक, दूध, दही, मसाले में सनी हुई ,
  किसी घर की गृहस्थी की तरह ,

मैंने माँ को देखा है ,
किसी खेत की तरह जुतते हुए,
किसी आकृति की तरह नपते हुए,
घडी की तरह चलते हुए,
दिए की तरह जलते हुए ,
फूलों की तरह महकते हुए ,
रात की तरह जगते हुए ,
नींव में अंतिम ईंट की तरह दबते हुए ,
मैंने माँ को देखा है ,

- पर..... माँ को नहीं देखा है,
  कभी किसी चिड़िया की तरह उड़ते हुए ,
  खुद के लिए लड़ते हुए ,
  बेफिक्री से हँसते हुए ,
  अपने लिए जीते हुए,
  अपनी बात करते हुए ,
  मैंने माँ को कभी नहीं देखा ,

  मैंने बस माँ को माँ होते देखा है .....

- खाने की चीज़ें माँ ने जो भेजी हैं गाँव से
  बासी भी हो गई हैं तो लज़्ज़त वही रही

- धूप को साया ज़मीं को आसमाँ करती है माँ
  हाथ रखकर मेरे सर पर सायबाँ करती है माँ

  मेरी ख़्वाहिश और मेरी ज़िद्द उसके क़दमों पर निसार
  हाँ की गुंज़ाइश न हो तो फिर भी हाँ करती है माँ.....
  डॉ नवाज़ देवबंदी

- उसकी एडी दूर की चोटी लगती है
  माँ के पाँव से जन्नत छोटी लगती है
  फाको ने तस्वीर बना दी आँखों में
  गोल हो कोई चीज तो रोटी लगती है .....
  डॉ नवाज़ देवबंदी

- दुआएँ माँ की पहुँचाने को मीलों–मील आती हैं
  कि जब परदेस जाने के लिए बेटा निकलता है
  . . . . . .मुन्नवर राना

- रूह के रिश्तों की ये गहराइयाँ तो देखिये,
  चोट लगती है हमारे और चिल्लाती है माँ।

- पूछता है जब कोई कि दुनिया मैं "मुहब्बत" है कहाँ
  मुस्कुरा देती हूँ मैं और याद आ जाती है माँ

- The best write up on Mother

  Anything written in 26 alphabets ,
  cannot describe the Mother

- भेजे गये फ़रिश्ते हमारे बचाव को
  जब हादसात माँ की दुआ से उलझ पड़े
  .....मुन्नवर राना

माँ ---मुन्नवर राणा

- लबों पर उसके कभी बद्दुआ नहीं होती
  बस एक मां है जो कभी खफा नहीं होती

- इस तरह मेरे गुनाहों को वो धो देती है,
  माँ बहुत गुस्से में होती है तो रो देती है

- मैंने रोते हुए पोंछे थे किसी दिन आंसू
  मुद्दतों माँ ने धोया नहीं दुपट्टा अपना

- अभी जिंदा है माँ मेरी मुझे कुछ नहीं होगा,
  जब घर से निकलता हूँ दुआ भी साथ चलती है

- **यह ऐसा क़र्ज़ है जो मै अदा कर ही नहीं सकता,**
  मै जब तक घर न लौटूं मेरी माँ सजदे में रहती है

- ए अँधेरे देख ले मुंह तेरा काला हो गया,
  माँ ने आँखें खोल दी घर में उजाला हो गया

मेरी ख्वाहिश है की मैं फिर से फ़रिश्ता हो जाऊं
माँ से इस तरह लिपटूं की बच्चा हो जाऊं

- जब भी कश्ती मेरी सैलाब में आ जाती है
  माँ दुआ करती हुई ख्वाब में आ जाती है

- **यह ऐसा क़र्ज़ है जो मै अदा कर ही नहीं सकता,**
  मै जब तक घर न लौटूं मेरी माँ सजदे में रहती है

- यह बात हमें सदा याद रखनी चाहिए
  और पल पल याद करते रहना चाहिए कि
  वो दुनिया के सबसे आमिर लोग हैं
  सबसे संपन्न लोग हैं
  जिनके माता पिता जीवित हैं

-- माँ के बारे में किसी ने कहा है कि

जब भी युद्ध होते हैं
लोग मरते है
तो मरने वाला किसी का भाई हो ना हो
किसी का बाप हो ना हो
किसी का पति हो न हो
एक माँ का बेटा ज़रूर होता है
एक माँ अपने बेटे को ज़रूर खो देती है शहीद करती है
तो माँ के बारे में जितना कहा जाये
हम उसके क़र्ज़ को कभी चुका नहीं सकते....

कवि ओम व्यास कि कुछ पंक्तिया है कि

मै अपने दुश्मनों के बीच भी महफूज़ रहता हूँ
क्यूंकि मेरी माँ कि दुआओं का खज़ाना कभी कम नहीं होता

- धरती की जितनी
  क्यों नहीं होती है माँ की उम्र
  जब सहती है धरती-सा दु:ख मौन वो

- ना जाने क्यूँ
  आज माँ के हाथों की बनी रोटियाँ
  बहुत याद आयीं.
  माँ के हाथों से बनी
  बिना घी लगी रोटी भी
  चूपड़ी से ज़्यादा सुकून देतीं थीं
  तब हम रोटियाँ
  मुँह से नहीं, दिल से खाते थे
  वो जो तृप्ति का अहसास था ना,
  वो भी पेट से नहीं,
  आत्मा के किसी कोर से आता था !
  और हाँ,
  पेट भर जाने के बाद
  जब माँ एक और रोटी जबरन खिलाती थी,

उस आखिरी रोटी की
मिठास अब समझ आती है...

तिनका तिनका जोड़ा तुमने
अपना घर बनाया तुमने,
अपने तन के सुंदर पौधे पर
हम बच्चों को फूल सा सजाया तुमने,
हमारे सब दुख उठाये और
हमारी खुशियों में सुख ढूँढा तुमने,
हमारे लिये लोरियाँ गाई और
हमारे सपनों में खुद के सपने सजाए तुमने।

हम बच्चे अपनी राह चले गये,
और तुम,
दूर खड़ी अपना मीठा आशीर्वाद देती रहीं।
पल बीते क्षण बीते...
समय पग-पग चलता रहा,
अपना हिसाब लिखता रहा,
और आज?

आज धीरे-धीरे तुम जिंदगी के
उस मुकाम पर आ पहुँची,
जहाँ तुम थकी खड़ी हो,
शरीर से और मन से भी।

मेरा मन मानने को तैयार नहीं,
मेरा अंतरमन सुनने को तैयार नहीं,
क्या तुम्हारे जिस्म के मिटने से
सब कुछ खत्म हो जाएगा?
क्या चली जाओगी तुम
अपने प्यार की झोली समेट कर?

क्या रह जाएंगे हम
तुम्हारी भोली सूरत देखने को तरसते हुए?
क्या रह जाएंगे हम
तुम्हारी गोदी में अपना बचपन ढूंढते हुए?

बोलो माँ?
क्या कह जाओगी
इन चांद, सूरज, धरती, और तारों से?
इन राह गुज़ारों से...
नदिया के बहते धारों से?
क्या कह जाओगी माँ?
किसे सौंप जाओगी हमें माँ?

मार्गदर्शक • मधुरिमा, 4 दिसंबर 2013

दुनिया अच्छी है...

स्कूल से आकर बच्चा रोज़ मां से लाड़ लगाता। कभी कुछ कहता, कभी कुछ। और मां हंसती रहती। एक दिन उसने मां के गले में बांहें डालते हुए कहा, 'मम्मी, तुम दुनिया की बेस्ट मम्मी हो!'

मां के लिए यह सुनना अजूबा नहीं था, क्योंकि हर बच्चे के लिए उसकी मां सबसे अच्छी ही होती है। पर वह हैरानी से आंखें फाड़कर बोली, 'क्या सचमुच?'

बच्चे ने तुरंत जवाब दिया, 'बिल्कुल। हंडरेड परसेंट सच।'

मां अपने बच्चे के प्यार से अभिभूत थी, पर उससे कौतुक करने के लिए बोली, 'मैं दुनिया की सबसे अच्छी मम्मी हूं, यह तुम कैसे कह सकते हो? दुनिया में कितनी सारी मम्मियां हैं और तुम तो अभी उनसे मिले भी नहीं, उनके बारे में जानते भी नहीं!'

बच्चा एक पल के लिए चुप रहा, फिर मां की तरफ़ देखते हुए भोलेपन से बोला, 'मेरी दुनिया तो तुम ही हो, मम्मी।' ●

छोटी छोटी बातें

मां....!
बहुत छोटी छोटी दो चार बातें कहनी थीं तुमसे
तुम्हें बहुत हंसी आती सुनकर
तुम्हारे सिवा किसी दूसरे को इससे मतलब भी नहीं
होगा भी तो कोई तुम जैसा समझ नहीं पाएगा मां
समझेगा भी तो मजा नहीं आएगा उसे.....

तुम्हें बताना था कि आज सुबह चाय बनाते हुए
चीनी की जगह नमक डाल दिया मैंने
पर किसी ने नहीं कहा, तू बुद्धू ही रहेगा
तुझसे नहीं बनेगी चाय, हट मैं बनाती हूं....।

मां, तुम्हें बताना था कि आज पिता को
मैंने गोलगप्पे खिला दिए
जो वे कभी नहीं खाते...और कितना मजेदार कि सारा पानी तो
प्लेट में ही ही निकल गया
गोलगप्पा मुंह में रखने से पहले....

मां, तुम हमेशा डांट लगाती थीं ना
कि हर सब्जेक्ट की कॉपी के पीछे वाले पन्ने कविताओं से क्यूं भर देता हूं
अब देख कितने सारे लोग बुलाते हैं यही कविताएं सुनने को....मुझे
देख ये शॉल भी ओढ़ाया, और.....

तू जानती है ना कितना अच्छा भाषण दे लेता हूं
बड़ी बड़ी गोष्ठियों, जलसों...सभाओं में अब भी देता हूं
उदारवाद, बाजारवाद, विदेशी पैसा, शिक्षा की जरुरत.....

सब कहता हूं
बड़े बड़े लोग सुनते हैं....बडी बड़ी बातें करता हूं.....

बस छोटी छोटी बातें सुनने को कोई नहीं है मां
तू तो छोटी छोटी बातों पर कितना खुश हो जाती थीं
बड़ी बड़ी बातें जीने का दिखावा करने को ठीक हैं
पर जीना तो इन्हीं छोटी छोटी बातों में ही होता है ना....

तू सुनती तो तुझे कितना मजा आता हर बात में
तू सुनती तो मुझे कितना मजा आता जीने में.....

तू प्याज काटने को कहती थीं....तो काटते काटते रोता था
अब भी रोता हूं मां.....प्याज काटते....काटते.....

कितनी छोटी छोटी बातें हैं मां,
जीना तो छोटी छोटी बातों में ही होता है....
तुझे तो पता है मां.....
तू सुन लेती तो .....

तू सुन तो लेती ना एक बार.....

- समय कैसे बदल जाता है

  जब हम छोटे थे और कोई हमारी बात समझ नहीं पाता था
  तब वो हमारे टूटे फूटे अलफ़ाज़ भी समझ जाती थी

  और हम बड़े हो गये
  हम कहने लगे
  आप नहीं जानती
  आप समझ नहीं पाएंगी माँ

- माँ ऊंचा सुनने लगी थी
  अच्छा ही हुआ
  बच्चे अब ऊंचा बोलने लगे थे

- सख्त राहों में भी सफ़र आसान लगता है

  ये मेरी माँ की दुआयों का असर लगता है

अपने कामों में है व्यस्त हम
और हमारे कामों में व्यस्त माँ

मां

सख्त चट्टानों सी
जिंदगी के बीच
झांकती हुई
नर्म धूप सी

ठिठुरती - कांपती
बेरहम सर्दियों में
कटोरी भर धूप सी

घने काले
बादलों में से
झांकती - मुस्कुराती
किसी किरण सी

ऐसी ही हो तुम

तुम हो
तो लगता है
ज़िंदा हैं उम्मीदें
जिंदा है ईश्वर

• सुवर्णा दीक्षित

कविता चित्र - रोहित रूसिया